अध्याय 34

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[एकान्त समय]* **गिनती 11:1-14:45**

आगे बढ़कर (या अपने नोट्स में से **पढ़**) संक्षेप में ***बताएं*** कि अपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (निर्गमन 11:1-14:31)से क्या सीखा।
अपने अभुभव का वर्णन करने वाले जन की सुने, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट) *[सुसमाचार]* **उद्धार विश्वास से है :यूहन्ना 1:12**

क-ध्यान करना

यूहन्ना 1:9-13. "सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है,जगत में आनेवाली थी। वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ और जगत ने उसे नहीं पहिचाना। वह अपने घर आया ओर उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से न मनुष्य की इच्छा से परन्तु परमेश्वर की से उत्पन्न हुए हैं।"

निम्नलिखित याद करने वाले को वचन को श्वेत/श्याम पट पर लिखें

उद्धार विश्वास से है यूहन्ना 1:12
परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। यूहन्ना 1:12

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के पद लिखें:

1. उद्धार सार्वभौमिक नहीं है।

यीशु मसीह वह"सच्ची ज्योति हैं जो प्रत्येक मनुष्य को रौशनी प्रदान करती है"। इसका मतलब यह नहीं है कि वह इसी प्रकार सबको उद्धार भी प्रदान करता है। यूहन्ना 1:9 और 1 तीमुथीयुस 2:4, 4:10, तीतुस 2:11 और 2 पतरस 3:9 हमें सार्वभौमिक उद्धार की शिक्षा नहीं देता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि यीशु हर एक सुसमाचार सुनने वाले व्यक्ति को आत्मिक ऊँचाई प्रदान करता है। वह सुसमाचार सुनने वाले हर एक व्यक्ति को आत्मिक मामलों को समझने की अलग अलग स्तर की समझ प्रदान करता है। लेकिन, सत्य तो यह है कि सुसमाचार सुनने वालों में से ज्यादातर लोग अपेक्षा अनुसार प्रतिउत्तर नहीं देते हैं। यह शिक्षा हमें स्पष्ट रूप में बताती है कि संसार ने यीशु की बातों को स्वीकार नहीं किया और न ही उसका स्वागत किया (यूहन्ना 1:10-11)। बहुत से वे लोग जिन्हें यह ज्योति प्रदान की गयी या जिन्हें पदोन्नति दी गयी, आज भी अन्धकार में जीवन व्यतीत करना पसन्द करते हैं। वे ज्योति को देखते तो हैं परन्तु में प्रवेश नहीं करते (यूहन्ना 3:19-21)। वे लोग जिन्होने कभी ज्योति पायी थी और जो फिर विश्वास से पीछे हट गये ,उनसे किसी भी तरह से पुन: पश्चाताप की उम्मीद करना अनहोना है (इब्रानियों 6:4-8; मरकुस 10:27)।

2. उद्धार को ग्रहण करना चाहिए अर्थात उस पर विश्वास करना चाहिए। प्राप्त करने का अर्थ है सक्रियता से समझना।

अन्धकार ने ज्योति, अर्थात यीशु मसीह को नहीं समझा (यूहन्ना 1:5)। संसार ने यीशु मसीह को स्वीकार नहीं किया (यूहन्ना 1:10)। उसके अपने लोग अर्थात इस्राएल ने भी यीशु मसीह का स्वागत नहीं किया (यूहन्ना 1:11)। लेकिन जितने लोग यीशु को ग्रहण करते हैं अर्थात जितने उस पर विश्वास करते हैं, यीशु ने उन्हें अपनी सन्तान होने का अधिकार दिया है(यूहन्ना 1:12)। उद्धार यीशु मसीह से ही है (यूहन्ना 14:6; प्रेरितों के काम 4:12; 1 यूहन्ना 5:11) और उद्धार पाने के लिए, मनुष्य को यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करना, उसका अपने हृदय और अपने जीवन में स्वागत करना तथा मज़बूती से यीशु मसीह की बातों तथा उस उद्धार पर विश्वास करना ज़रूरी है जो उसने अपनी मृत्यु व पुनरूत्थान के द्वारा कमाया है। यीशु मसीह पर विश्वास होने या विश्वास करने का यही अर्थ है।

हर एक के द्वारा स्वीकार किया गया।

यूहन्ना 1:12 वास्तव में लिखा है, "जितनों ने उसे ग्रहण किया.....उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया।" एक तरफ जहां संसार और यहूदियों ने एक राष्ट्र के तौर पर उद्धारकर्ता को अस्वीकार कर दिया, वहीं दूसरी ओर बहुत से यहूदियों और गैर यहूदियों ने उसे स्वीकार किया। "सारे" शब्द का अर्थ भी वही है जो यूहन्ना 3:16 में "जितनों" का है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह व्यक्ति यहूदी था कि यूनानी। अब से, लोग बिना नागरिकता व अपने रूप के कारण भेद भाव का सामना किये उद्धार के सर्वोच्च उपहार को अपने जीवन में प्राप्त कर लेते हैं।

3. उद्धार मिलने से व्यक्ति परमेश्वर की सन्तान बन जाता है।

"अधिकार" शब्द का अर्थ।

ग्रीक शब्द को "अधिकार" या "अवसर" के रूप में अनुवाद किया जा सकता है। यहूदियों को अपने वंशजों से मिले हुए अधिकारों पर बहुत घमण्ड था, वे अपने आप को 'अब्राहम की सन्तान" कहा करते थे (यूहन्ना 8:33)। यहूदी और नीकेदमुस विश्वास करते थे कि कोई भी जन अपने वंशजों या जिस घर में वह पैदा हुआ है उसकी वजह से अपने आत्मिक स्थान को प्राप्त करते हैं। जबकि सत्य यह है कि किसी घर में पैदा होने या किसी के वंशजों की वजह से कोई परमेश्वर की सन्तान नहीं बन जाता (रोमियो 9:6-9)। कोई भी 'मसीही' पैदा नहीं होता! परमेश्वर की सन्तान बनने का अधिकार हमें केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने अर्थात उसका अपने जीवन में स्वागत करने तथा उसकी बातों पर विश्वास करने से मिलता है।

एक परमेश्वर की सन्तान।

एक विश्वासी गोद लिये जाने के द्वारा परमेश्वर का आत्मिक पुत्र (इफिसियों 1:5; रोमियों 8:15) और नये जन्म के द्वारा आत्मिक तौर पर परमेश्वर की सन्तान बनता है(यूहन्ना 1:13; रोमियो 8:16)। प्रेरित यूहन्ना और पौलस के लिए ,उद्धार का मतलब किसी घराने या किसी धर्म में पैदा होने से नहीं है, बल्कि आत्मा में नये हो जाने या नया जन्म प्राप्त करने से है। पवित्र आत्मा विश्वासी को नया जीवन प्रदान करता तथा उसे पूरी तरह परमेश्वर की समानता में रूपान्तरित कर देता है। कोई भी व्यक्ति अपने खून के कारण अर्थात अपने शारीरिक अवतरण से परमेश्वर की सन्तान नहीं बनता। वह केवल परमेश्वर की श्रेष्ठ प्रतिज्ञाओं के आधार पर परमेश्वर की सन्तान बनता है (रोमियों 9:6-9)।

कोई भी व्यक्ति अपने शरीर की इच्छा अर्थात अपनी समझ,निर्णय या स्वाभाविक इच्छा या मनुष्य की भ्रष्टता की वजह से परमेश्वर की सन्तान नहीं बनता (रोमियों 8:7-8)। वह केवल परमेश्वर की श्रेष्ठ दया के कारण ही परमेश्वर की सन्तान बनता है(रोमियों 9:14-18)। वह अपने भले या धार्मिक कामों की वजह से भी परमेश्वर की सन्तान नहीं बनता। वरन वह परमेश्वर द्वारा चुने जाने के कारण परमेश्वर की सन्तान बनता है (रोमियों 9:10-13)।

कोई भी व्यक्ति मनुष्य की इच्छा से अर्थात शारीरिक, यौन समबन्धी या प्रजनन के समय पुरूष के उकसाने से परमेश्वर की सन्तान नहीं बनता। वह केवल परमेश्वर द्वारा नया जन्म पाने से ही परमेश्वर की सन्तान बनता है (यूहन्ना 1:13; 3:3-8)।

परमेश्वर की सन्तान बनें।

एक व्यक्ति जिस क्षण विश्वास करता है, उसी क्षण से वह परमेश्वर की सन्तान बनना प्रारम्भ हो जाता है। उसी क्षण परमेश्वर का आत्मा मनुष्य में प्रवेश करता है (अर्थात उसकी देह और आत्मा) वह परमेश्वर की सन्तान बनकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर जाता है। जब यूहन्ना 1:12 में विश्वासी को परमेश्वर की सन्तान होने के अधिकार दिये जाने की बात की गयी, तो यूहन्ना यह नहीं लिखता कि वह भविष्य में परमेश्वर की सन्तान बन जाएगा, परन्तु वह उसी समय पूर्ण रूप से परमेश्वर की सन्तान बनने की बात करता है अर्थात परमेश्वर की आत्मा से पूरी तरह शुद्ध व देह में पूरी तरह रूपान्तरित।

उद्धार कोई बिन्दू नहीं परन्तु एक रेखा है। उद्धार एक मसीही जन के जीवन में एक बार होने वाली कोई घटना नहीं है बल्कि यह यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक लगातार चलने वाली एक प्रक्रिया है! व्यक्ति के विश्वास करते ही उद्धार की प्रक्रिया

शुरू हो जाती है। लेकिन यह उद्धार का काम कवल मृतकों में से शरीर के जी उठने के बाद ही पूरा होता है। ठीक इसी प्रकार से, जब कोई व्यक्ति मसीह को अपने हृदय और जीवन में मसीह को स्वीकार करता है तो उसी क्षण परमेश्वर की सन्तान बनने का काम प्रारम्भ हो जाता है। उसके बाद से, वह एक परमेश्वर की सन्तान है और उसके पास सम्पूर्ण परिपूर्णता में परमेश्वर की सन्तान बनने का ईश्वरीय अधिकार होता है। इसे मसीह के दूसरे आगमन पर समझा जाता है, जब हमारा आत्मा पूरी तरह से शुद्ध (1 यूहन्ना 3:1-3) और उसका शरीर पूरी तरह से रूपान्तरित हो जाता है (फिलिप्पियों 3:21)। अत: अपने सम्पूर्ण जीवन काल में, एक विश्वासी शुद्ध व लगातार उन सारी बातों में ज्यादा से ज्यादा रूपान्तरित होता रहता है जिसका प्रारम्भ उसमें हो चुका है।

निष्कर्ष। परमेश्वर की सन्तान में होने वाला रूपान्तरण दोनों प्रकार से होता है अर्थात यह परमेश्वर की ओर से तत्कालिक प्रतिक्रिया (एक शुरूआत) होती है और लगातार चलने वाली प्रक्रिया भी होती है (एक नियमित रेखा)। जिस क्षण परमेश्वर का जीवन (पवित्र आत्मा) हमारे प्राणों में प्रवेश कर जाता है, उसी क्षण विश्वासी परमेश्वर की सन्तान बन जाते हैं।
लेकिन यह रूपान्तरण केवल भविष्य में तब ही पूरा होगा जब हम मसीह को आमने सामने देखेगें। इसी कारण प्रेरित यूहन्ना "परमेश्वर की सन्तान बन जाएंगे" की बजाय "परमेश्वर की सन्तान बन जाते हैं" वाक्य का इस्तेमाल करता है।

ख. याद करना व पुनरावलोकन करना

1) एक खाली कार्ड या अपनी कॉपी के एक पेपर पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***
2) सही तरीके से बाइबल के वचनों को ***याद करें।*** उद्धार विश्वास से है:यूहन्ना 1:12
3) ***पुन: अवलोकन!*** दो दो के जोड़े में बंटकर, एक दूसरे के द्वारा कि गयी पिछली आयत का मूल्यांकन करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70मिनट) *[कलीसिया]*
	कलीसिया की अगुवाई : 1 पतरस 5:1-7

बाइबल अध्ययन के पाँच कदमों का इस्तेमाल करते हुए 1 पतरस 5:1-7 को मिलकर पढ़ें।
इस बाइबल अध्ययन का मकसद नये नियम में अगुवाई को लेकर दी गयी शिक्षाओं को अधिक गहराई से समझना है।
परिभाषाएं।
क्योंकि बाइबल के कई अनुवादों में ज्यादा अगुवों के लिए ग्रीक शब्द का सही अनुवाद नहीं किया गया है, जिसके कारण इस अध्ययन में मूल ग्रीक शब्दों का सही तरीके से अग्रेजी भाषा में अनुवाद किया गया है।
(1) ग्रीक शब्द 'प्रिस्ब्यूटराकस' (एकवचन) और 'प्रेसब्यूटेरोई' (बहुवचन) को लगातार अग्रेजी में 'पुरनिए' और 'पुरनियों' में अनुवाद किया गया है,जो मण्डली की अगुवाई के कार्यालय को प्रदर्शित करता है। उन्हें 'याजक' (याजकों) या 'पासबान' (पासबानों) जैसे शब्दों से सम्बोधित नहीं किया गया, जो आधुनिक काल में परम्परागत कलीसियाओं में पद की शक्ति को प्रदर्शित करते हैं।
(2)ग्रीक शब्द 'एपिस्कोपोस'(एकवचन) और 'एपिस्कोपाई'(बहुवचन) को लगातार: 'निरीक्षक' और 'निरीक्षकों' द्वारा सम्बोधित किया गया है, जो पुरनियों की एक ज़िम्मेदारी व कार्यों को प्रगट करते हैं। उन्हें 'बिशप' या 'बिशपों' शब्द द्वारा अनुवाद नहीं किया गया, जो आधुनिक एपिस्कोपल कलीसिया में और भी अधिक ऊँचे पद को प्रगट करते हैं।
(3) ग्रीक शब्द 'पोईमेन'(एकवचन) और 'पोईमेन्स' (बहुवचन) शब्दों का अनुवाद लगातार: 'चरवाहा' या 'चरवाहों' शब्दों से होता रहा, जो पुरनियों के ही एक और जिम्मेदारी और कार्यों को दर्शाते हैं। उन्हें 'पासबान' या 'पासबानों' में अनुवाद नहीं किया गया, जो आधुनिक काल की कलीसिया में शक्ति के पद को प्रगट करते हैं।
(4) ग्रीक शब्द 'एपिस्कोपिओ' (1 पतरस 5:2) को अग्रेजी के शब्द: 'निरीक्षण करने' या 'एक निरीक्षक होने' से किया गया है।
(5) और ग्रीक शब्द 'पोईमाईनो' (प्रेरितों 20:28; 1 पतरस 5:2) को अग्रेजी में: 'चरवाही करने' या 'एक चरवाहा बनना' से अनुवाद किया गया है।

'एक कार्यालय' नियुक्त किया गया या सौंपा गया काम है। इसमें जिस क्षेत्र में आपको जिम्मेदारी पूरी करने के लिए अधिकार दिया गया है उसके साथ साथ एक लक्ष्य भी जुड़ा हुआ है। बाइबल के अनुसार, मण्डली में एक अगुवाई के क्षेत्र में केवल एक ही कार्यालय नियुक्त किया गया है और वह है एक पुरनिया(बहुवचन : पुरनिए) (प्रेरितों 11:30; 14:23; 20:17. 1 तीमुथीयुस 5:17; याकूब 5:14; 1 पतरस 5:1)।

सेवा करने के कार्यालय निम्नलिखित हैं: मिश्नरी, पासबान, सुसमाचार प्रचारक, चरवाहे और शिक्षक (इफिसियों 5:11-12), डीकों (प्रेरितों 6:1-7),समूह का अगुवा, जवानों का अगुवा इत्यादि। सेवकों को पुरनियों के द्वारा नियुक्त किया जाता है और वे पुरनियों के प्रति उत्तरदायी होते हैं। अत: बाइबल के अनुसार 'अगुवाई' एक 'सेवा' हैं न कि कोई 'अधिकार का पद' (मत्ती 20:45-28; 1 पतरस 5:2-3)।

किसी एक अगुवे (पुरनिए,पासबान या याजक) ने ही मण्डली की सारे कामों में अगुवाई नहीं करनी चाहिए, इस कारण यह ज़रूरी है कि बहुत सी घरेलू कलीसियाएं आपस में मिलकर अगुवों के एक परिषद या समीति के तहत एक मण्डली या कलीसिया का निर्माण करने। व्यवहारिक तौर पर या परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए एक मण्डली में तीन से आठ घरेलू कलीसियाएं शामिल होना चाहिए, जो मिलकर एक ऐसे आधिकारिक समूह का र्निमाण करें जिसमें कम से कम तीन पुरनिए शामिल हों। कम से कम तीन पुरनियों वाले एक दल ने कुछ घरेलू कलीसियाओं को मिलाकर एक कलीसिया या मण्डली का र्निमाण करना चाहिए। इस तरीके से हर एक कलीसिया उतनी ही बढ़ी होगी जिसका आसानी से प्रबन्ध किया जा सके और फिर भी उसमें बाइबल के अनुसार अगुवाई पायी जाए।

कदम 1. पढ़ें। परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये हम मिलकर 1 पतरस 5:1-7 को एक साथ पढ़ें।

आइये हम बारी-बारी से निर्धारित सभी वचनों को पढ़ें।

कदम 2 खोजें निरीक्षण

***ध्यान दें।* इस अनुच्छेद में कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?**

या इस अनुच्छेद के किस सत्य ने आपके हृदय या मन को छुआ?

लेखा रखें। एक या दो बातों की गहन पड़ताल करें, जो आपको समझ आयी हो। उन पर सोच विचार करें तथा अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

बाँटे। (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट विचार करने तथा उन विचारों को लिखने के बाद, उन विचारों को बारी बारी आपस में बाँटें) आइयें हम आपस में बारी बारी बाँटे कि हमें क्या प्राप्त हुआ है।

(लोगों द्वारा खोजी गयी बातों को बांटने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है। याद रखें के प्रत्येक लघु समूह के लोग अलग बातों को बाँट सकते हैं, यह जरूरी नहीं है कि सभी सदस्यों द्वारा बाँटे गयें विचार एक ही समान हों।

5:2-3

खोज 1. यहां पर पुरनियों के लिए तीन शब्दों को इस्तेमाल किया गया है।

प्रत्येक अगुवे के दो उददेश्य होते हैं।

बाइबल में पुरनियों को तीन शब्दों से जाना जाता है: पुरनिए (ग्रीक:प्रेसबीटीरोई)(प्रेरितों 20:19; 1 तीमुथीयुस 5:17; 1 पतरस 5:1),चरवाहा और पासबान (ग्रीक:पोईमाइनो) (क्रिया) (प्रेरितों 20:28; 1पतरस 5:2) और निरीक्षक (ग्रीक: इपिस्कोपिओ) (क्रिया 20:28; 1पतरस 5:2)

पुरनियों का संगठन।

नये नियम की कलीसिया में मसीहियों के बीच में अगुवाई को लेकर कोई याजकतन्त्र अर्थात कोई ऊँच नीच नहीं थी। नये नियम में कलीसियाआ की अगुवाई किसी एक अगुवे के द्वारा (पास्टर या याजक) नहीं होती थी, वरन लोगों के समूह के द्वारा होती थी, जिन्हें पुरनियों का समूह या पुरनियों का परिषद कहा जाता था (ग्रीक:प्रेस्बीटेरियन)(1 तीमुथीयुस 4:14)। उनके काम को 'चरवाहे या पासबान' तथ 'एक निरीक्षक' के रूप में वर्णित किया गया है(प्रेरितों 20:28; 1 पतरस 5:2)। अगुवाई किसी

एक व्यक्ति के लिए अवसर नहीं परन्तु वह लोगों के एक समूह, बुलाये गय पुरनियों और पुरनियों के समूह या पुरनियों के परिषद का कर्तव्य हैं।

पुरनिये की आयु।

यद्यपि प्राचीन काल में 'पुरनिये' शब्द का अर्थ ही किसी ऐसे व्यक्ति से हुआ करता था जो समाज में बाकि लोगों से उम्रदार, और अनुभवी हो,लेकिन पुराने व नये दोनो ही नियमों में इस शब्द को किसी बुढ़े व्यक्ति तक ही सीमित नहीं किया जा सकता। पुराने नियम में 'पुरनिया' शब्द (निर्गमन 18:13-26; गिनती 11:16-17; व्यवस्थाविवरण 1:9-18) पुराने नियम के लोगों (इस्राएल)में सारे अगुवों के ऊपर अगुवाई के एक कार्यालय को दर्शाता है। लेकिन नये नियम में(प्रेरितों के काम 11:30; 14:23; 20:17, 28; 1 तीमुथीयुस 5:17, तीतुस 1:5-6; 1 पतरस 5:1-4) शब्द 'पुरनिये' परमेश्वर के लोगों (मण्डली या कलीसिया) में सारे अगुवों के ऊपर अगुवाई के एक कार्यालय को दर्शाता है। कहीं पर भी किसी उम्र को एक मानक नहीं ठहराया गया है। पुराने नियम व नये नियम दोनों ही जगहों पर पुरनियों की अपनी ही विशेषताएं व जिम्मेदारियां थो और उन्हें लोगों की सेवा करनी थी। आज, अगर कोई जवान पुरूष, यदि अपने जीवन में बाइबल की मांगों के मुताबिक खरा उतरता है तो वह एक पुरनिया बन सकता है(जैसे कि सेवा के लिए कलीसिया का कार्यालय)(प्रेरितों के काम 14:21-23; 1 तीमुथियुस 3:6-7; 4:12)! अत: 'पुरनिये' का मतलब केवल किसी बूढ़े व्यक्ति से नहीं है,लेकिन इसका सरोकार एक ऐसे व्यक्ति से है जो आत्मिक तौर पर परिपक्व व मण्डली में सेवा व अगुवाई के स्थान या पद पर खड़ा हो सके।

5:1

खोज 2. प्रेरित पौलुस खुद अपने को पुरनिया कहता है।

पुरनिए के रूप में एक प्रेरित का काम।

मसीह के प्रेरित सारे जगत या सार्वभौमिक कलीसिया में किसी खास मकसद को पूरा करने के लिए बुलाए गये लोगों का समूह थे। उन्होंने अपनी पहली मण्डली यहूदियों,सामरियों और अन्यजातियों के बीच में तैयार की।

यरूशलेम की पहली मण्डली मं प्रेरितों ने भी पुरनियों के रूप में काम किया (प्रेरितों 6:2-6)। बाद में उन्होने मण्डली में प्रथम पुरनिए या प्राचीन को नियुक्त किया (प्रेरितों 14:23; तीतुस 1:5)।

यद्यपि पौलुस एक प्रेरित था, लेकिन जब भी वह किसी कलीसिया में गया तो उसने एक पुरनिए के रूप में ही काम किया। जिस प्रकार से वह दूसरों को अधीन होने की शिक्षा देता था ठीक वैसे वह भी अधिकारियों की अधीनता में अपने आप को अधीन करता था। उसने कभी किसी मण्डली पर अपना हुक्म नहीं चलाया और न ही किसी प्राचीन पर प्रभुता की।

कदम 3 प्रश्न	व्याख्या
ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद क आधार पर किस विषय पर प्रश्न पूछना पसन्द करेंगे? आईये, हम 1 पतरस 5:1-7 को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं आर फिर भी जो बातें समझ न आएं उनके लिए प्रश्न पूछे।	
लेखा ले: सबसे पहले एक स्पष्ट प्रश्न को तैयार कर लें। फिर उस प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।	
बाटे (समूह द्वारा दो मिनट तक सोच विचार करने तथा अपने विचार लिखने के पश्चात, प्रत्येक सदस्य अपने प्रश्न को अन्य सदस्यों के साथ बांटे)	
चर्चा करें: (इसके पश्चात कुछ प्रश्नों का चुनाव करने के बाद, समूह में चर्चा करने के द्वारा उन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों व चर्चाओं के उदहारण दिए गये है)	

5:4

प्रश्न 1 (मसीह) कलीसिया का सुनिश्चित अगुवा कौन है?

मत्ती 16:18; इफिसियों 1:22; 1 पतरस 2:25;5:4 पढ़ें।

ध्यान दें। मत्ती 16:18 में यीशु ने कहा,"मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया को बनाऊँगा।"

यीशु ही कलीसिया का असली मालिक है।

वह कहता है, "यह मेरी कलीसिया है"। सार्वभौमिक कलीसिया के अर्न्तगत आने वाली सारी स्थानीय कलोसियाएं उनके अगुवों व उनके सदस्यों की जागीर नहीं हैं, लेकिन वे केवल यीशु की कलीसियाएं हैं। उसने उन्हें खुद अपने लहु से खरीदा है (प्रेरितों 20:28)। इस भाव की तुलना करें: 'परमेश्वर की भेड़ें'(1पतरस 5:2)।

यीशु ही कलीसिया को बनाने वाला है।
इसके अलावा योशु ने कहा," मैंने अपनी कलीसिया को बनाया है"। मिश्नरी, कलीसिया के अगुवे या कोई और लोग कलीसिया को नहीं बनाते। यीशु ही कलीसिया को बनाते और लोगों को अपने दासों के रूप में इस्तेमाल करते हैं(1 कुरिन्थियों 3:5-11)। बिना यीशु मसीह के हम कोई भी ऐसा काम नहीं कर सकते जिसकी अनन्त कीमत हो (यूहन्ना 15:5)।
यीशु कलीसिया का सिर है।
इफिसियों 1:22 में, परमेश्वर ने यीशु को जगत की सारी वस्तुओं व साथ ही साथ कलीसिया पर भी शिरोमणी(सिर) घोषित कर दिया। धरती पर कोई भी जन इस पद को नहीं ले सकता! यीशु मसीह ही सार्वभौमिक व स्थानीय कलोसिया का मुख्य चरवाहा (पास्टर) है (1 पतरस5:4)। यीशु ही हमारे आत्मा को निरीक्षक (बिशप) है(1 पतरस 2:25)।
अत: यीशु मसीह र्निमाता, स्वामी और सावभौमिक व हर एक स्थानीय कलीसिया का अब और सदाकाल के लिए सिर है। वह ही सार्वभौमिक व प्रत्येक स्थानीय कलीसिया का सुनिश्चित व अनन्त अगुवा है।

5:1
प्रश्न 2.(प्रेरित) कलीसिया के बुनियादी अगुवे कौन हैं?
पढ़ें इफिसियों 2:20(प्रकाशितवाक्य 21:14); 1 पतरस 5:1
ध्यान दें।
यीशु मसीह के प्रेरित ही ऐतिहासिक कलीसिया के संस्थापक है।
प्रेरितों ने यहूदियों में सुसमाचार प्रचार किया और यहूदियों के बीच में पहली कलीसिया की स्थापना हुई (प्रेरितों 2:14, 37-42)। जिस समय पर समारिया में प्रथम कलीसिया की स्थापना हुई उस समय प्रेरितों का होना अनिवार्य था। (प्रेरितों 8:14-17; 9:31)। अन्तत:, प्रेरितों ने अन्यजातियों के बीच में सुसमाचर प्रचार किया और इस प्रकर अन्यजातियों के बीच में प्रथम मण्डली ही स्थापना हुई (केसरिया में, प्रेरिता अध्याय 10-11; तथा पौलुस की प्रथम मिश्नरी यात्रा के दौरान, प्रेरितों अध्याय 13-14)।

यीशु मसीह के प्रेरित कलीसिया के बुनियादी अगुवे थे।
बाइबल बताती है कि कलीसिया प्रेरित व भविष्यद्वक्ताओं की बुनियाद पर बनी है(इफिसियों 2:20)। ये प्रेरित यीशु मसीह के 11 चेले व पौलुस थे। वे यीशु मसीह के द्वारा चुने,बुलाये और भेजे गये थे(मरकुस 3:13-15; यूहन्ना 17:18;20:21) और वे उसकी मृत्यु और उसके पुनरूत्थान के गवाह थे(लूका 24:45-48; प्रेरितों 1:21-22)। चाहे एक आमन्त्रण को अस्वीकार कर दिया जाए, लेकिन बुलाहट को बिना अनाज्ञाकारिता के नहीं अस्वीकार किया जा सकता। एक बुलाहट का पालन करना जरूरी है(प्रेरितों 9:15; 22:14-15; 26:16-18; रोमियों 1:14; 1कुरिन्थियों 9:1,16; गलातियों 2:7-9)। प्रेरितों ने यहूदियों, सामरियों और अन्यजातियों के बीच में पहली ऐतिहासिक कलीसिया की शुरूआत की थी (प्रेरितों 1:8;9:31; 10:24-25; 11:14-18)। भविष्यद्वक्ताओं, अर्थात प्रेरणादायक प्रचारक, प्रोत्साहक, जैसे कि बरनबास, तीमुथीयुस, तीतस और सिलास ने उनकी सहायता की(प्रेरितों 15:32)। प्रेरितों व उनके सहायकों ने पहलो बार अपनी मण्डली के प्रशिक्षित लोगों को मण्डली पर नियुक्त किया और उन्हें 'पुरनिया' कहा(प्रेरितों 14:23; तीतुस 1:5)। इन प्रेरितों के पास में कोई भी उत्तराधिकारी नहीं था, क्योंकि (प्रेरितों 1:21-22 के अनुसार कोई किसी में भी वे योग्यताएं नहीं थी! अत: प्रेरित गण ही कलीसिया के बुनियादी अगुवे थे (मत्ती 16:18-19; 18:18; इफिसियों 2:20 प्रकाशितवाक्य 21:14)। उन्होंने बाइबल में सम्बोधित किये गये ज्यादातर लोगों के बीच में प्रथम कलीसिया का निर्माण किया: यहूदियों के बीच (यहूदा के पुराने दक्षिणी राज्य से), सामरियों के बीच में(इस्राएल के पुराने उत्तरी राज्य के मिश्रित वंशज) और अन्यजातियों के बीच में (पुराने नियम में परमेश्वर की निज प्रजा कहे जाने वाले लोगों को छोड़ अन्य लोग। (प्रेरितों 1:8)
यीशु के प्रेरितों ने मण्डली में एक प्राचीन या पुरनिए के रूप में काम किया।
1 पतरस 5:1, पतरस अपने आपको एक प्राचीन बताता है। जब पतरस ने गैर मसीहियों के बीच में सुसमाचार प्रचार किया, यहूदियों, सामरियों और अन्यजातियों के के बीच में प्रथम कलीसिया का निर्माण किया, नये नियम की कुछ पुस्तकों को लिखा,तब वह एक प्रेरित के रूप में कार्य कर रहा था। लेकिन जब पतरस एक मण्डली में रहा या उसने एक मण्डली में काम किया, तब उसने कलीसिया के एक प्राचीन के रूप में ही काम किया(1 पतरस 5:1)। दूसरे प्रेरितों ने भी पुरनियों या प्राचीनों के रूप में ही काम किया(प्रेरितों 6:4; 2 यूहन्ना1; 3 यूहन्ना 1)। लेकिन उनकी बुलाहट अधिक चेले बनाने व दूसरे स्थानों में जाकर कलीसिया स्थापित करने की थी इस कारण, उन्होंने स्थानीय लोगों को स्थानीय कलीसिया के प्राचीन के रूप में खड़ा किया (प्रेरितों 14:23; तीतुस 1:5)

5:1-2

प्रश्न 3. (प्राचीन)कलीसिया में तैयार व नियुक्त किये गये प्राचीन कौन थे।

पढ़ें प्रेरितों 14:21-23; 1 तीमुथीयुस 4:14; तीतुस 1:5; 1 पतरस 5:1-2।

ध्यान दें।

यहूदियों की मण्डली में प्राचीन।

बाइबल में हम प्रेरितों के बुलाये व नियुक्त किया जाने के बारे में (मरकुस 3:13-19) और डीकनों के नियुक्त किया जाने के बारे में पढ़ते हैं (प्रेरितों 6:1-7),लेकिन हम कहीं पर भी यहूदियों की मण्डली में किसी प्राचीन की नियुक्ति के बारे में नहीं पढ़ते। यरूशलेम की कलीसिया में प्राचीनों का जिक्र पहली बार हमें प्रेरितों 11:30 और प्रेरितों 15:2 में देखने को मिलता है, लेकिन उनकी नियुक्ति के बारे में कहीं जिक्र नहीं किया गया है। यह केवल इस कारण हुआ कि प्राचीनों को काम यहूदियों में कोई स्थायी या जरूरी काम नहीं था। पुराने नियम के दौरान प्राचीन लोग पहले ही परमेश्वर के लोगों पर अधिकारी थे। प्राचीन गण या तो अपने परिवार के मुखिया, या यहूदी समाज में किसी प्रतिष्ठित पद पर कार्यरित अधिकारी थे और उन्हें लोगों ने खुदा चुना होता था। (निर्गमन 3:16; 18:13-26; गिनती 11:16-17; व्यवस्था विवरण 1:9-18)। अत: जब प्रेरितों ने यहूदियों के बीच में प्रथम मण्डली का निर्माण किया,तब प्राचीनों को नये संगठन में नियुक्त अधिकारियों के समान ही रखा गया, लेकिन इसकी कोई औपचारिक घोषणा नहीं की गयी इसी कारण हम प्रेरितों के काम में इसका जिक्र नहीं पाते हैं।

अन्यजातियों की मण्डली में प्राचीन ।

अन्यजातियों की मण्डली में प्राचीनों की नियुक्ति का जिक्र स्पष्ट रूप में किया गया है, क्योंकि अन्यजातियों में प्राचीनों को प्रचार नहीं था। अत: प्रेरितों या उनके सह कर्मियों ने, जिन्होंने इन मण्डलियों को स्थापित किया था 'उन्होंने एक एक कलीसिया पर प्राचीनों को नियुक्त किया' (प्रेरितों 14:23;तीतुस 1:5)। 'नियुक्त' किये जाने का अर्थ वास्तव में हाथों को उठाकर चुनाव करने से है, लेकिन इस स्थान में नियुक्ति का अर्थ यह नहीं हो सकता, क्योंकि पौलुस और बरनबास इस प्रक्रिया का हिस्सा थे। इस शब्द का अर्थ चुनाव या नियुक्ति के तरीके का निर्धारण किये बिना 'चुना जाना, नियुक्त किया जाना या स्वीकार करना'हो सकता है। हम मान सकते हैं कि चुनाव करने का तरीका ठीक वैसा ही होगा जैसा पहले प्रेरितों की पुस्तक में दर्शाया गया है, जहां पर विश्वासियों ने डीकनों का चुनाव किया और प्रेरितों ने उनकी नियुक्ति की(प्रेरित 6:5-6)। अत: प्राचोन, मसीही कलीसिया के नियुक्त किये गये अगुवे थे(तीतुस 1:5) और प्राचीनों के परिषद ने हर एक कलीसिया या मण्डली पर एक अगुवे को नियुक्त किया (ग्रीक: प्रेसबीटेरियन, 1 तीमुथीयुस 4:14)।

बाइबल की शिक्षाओं में प्राचीनों का स्थान।

परमेश्वर ने पवित्र आत्मा द्वारा प्राचीनों को नियुक्त किया। उसने उन्हें मण्डली का अगुवा होने के लिए नियुक्त किया। उसने उनको उनके कर्तव्यों (लक्ष्यों)के बारे में भी निर्देश दिये।

पौलुस ने कलीसिया के प्राचीनों (ग्रीक:प्रेस्बीटेरियो) के लिए कहला भेजा (प्रेरितों 20:17):"इसलिए अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष(ग्रीक: ऐपिस्कोपोई)ठहराया है कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो(ग्रीक : पोईमाइनो), जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है।(प्रेरितों 20:28)"

[1] 'पासबान' नहीं जैसा कि बहुत से अनुवादकों ने 'प्राचीनों' की जगह पर 'पासबान' कर दिया है।

और प्रेरित पतरस ने एशिया माइनर की कलीसिया को लिखा (1पतरस 1:1): परमेश्वर के उस झुण्ड की जो तुम्हारे बीच में है रखवाली करो (ग्रीक:एपिस्कोपोई)(1पतरस 5:2)।" दोनों ही प्रेरित हमें सिखाते हैं कि मण्डली के अगुवों को 'प्राचीन" कहा गया (प्रेरितों 11:1;15:2,4,6,22;14:23; 20:17; 1तीमुथीयुस 4:14; 5:17; तीतुस 1:5; 1 पतरस 5:1)और उनका काम 'चरवाही करना' और 'निरीक्षक बनना' था(प्रेरितों 20:28 1 तीमुथीयुस 3:11; पतरस 5:2)। अत: शब्दों के सन्दर्भ में हमें यह पता चलता है कि 'प्राचीन','रखवाले' और 'अध्यक्ष' जैसे शब्दों का इस्तेमाल नये नियम में अलग अलग तरीकों से किया गया है। 'प्रीस्ट','बिशप' और 'पास्टर' जैसे परम्परागत और आधुनिक शब्द 'प्राचीन','चरवाहे' और 'अध्यक्ष' के लिए ग्रीक व लैटिन भाषा में इस्तेमाल किये जाने वाले वैकल्पिक शब्द हैं।

नये नियम के दौरान ये सारे शब्द केवल प्राचीन के कार्यालय और उसके दो मुख्य कामों को प्रगट किया करते थे। लेकिन दूसरी या तीसरी सदी के आते आते इन शब्दों के अनुसार याजकतन्त्र अलग अगल पदों में विभाजित हो गया! मैनुएल 4, उका 19 परिशिष्ट देखें: अगुवाई:मसीही कलीसियाओं में अगुवाई का ऐतिहासिक विकास। नये नियम के समय में अगुवाई को लेकर कोई याजकतन्त्र अर्थात कोई ऊँच नीच नहीं थी! उनके बीच में केवल प्राचीनों का समूह हुआ करता था, जिसे हर कलीसिया के अन्दर प्राचीनों के परिषद के रूप में जाना जाता था, और व कलीसिया की अगुवाई से जुड़ी सारी ज़िम्मेदारियों को पूरा किया करते थे। 'प्राचीन' शब्द अगुवे की आत्मिक परिपक्वता और उसके अनुभव तथा समाज में उसके आदर को दर्शाता है। 'अध्यक्ष' और 'चरवाहा' शब्द अगुवे के लक्ष्य के प्रति कार्यों को दर्शाते हैं। अत: प्रत्येक कलोसिया के प्राचीनों को अपनी

कलीसिया में 'अध्यक्ष या निरीक्षक' तथा 'चरवाहा' होना चाहिए। सारे प्राचीन कलीसिया में शिक्षक और प्रबन्धक के रूप में काम कर सकते हैं।

प्रश्न 4. (छत्रछाया संगठन) नये नियम के दौरान क्या प्राचीनों के ऊपर भी कोई अगुवे नियुक्त किये गये थे?

पढ़ें प्रेरितों के काम 15:1-2,4,6,22; प्रेरितों 20:17,28

ध्यान दें।

(1) अगुवों के पास समान अधिकार मगर भिन्न जिम्मेदारियां थी।

कई अगुव सीधे तौर पर कलीसिया के प्रबन्धों से जुड़े थे तो दूसरे लोग कलीसिया में शिक्षा देने व प्रचार कार्य करते थे (1 तीमुथियुस 5:17)। कलीसिया में अलग अलग जिम्मेदारी होने के बावजूद भी वे सब मिलकर प्राचीनों का एक परिषद थे। जिसमें एक प्राचीन दूसरे अगुवे और प्राचीन से बिल्कुल अलग नहीं था।

नये नियम की कलीसिया में किसी बाइबल कालेज या थिओलोजिकल सेमिनरी में जाकर प्रशिक्षण प्राप्त किये हुए अगुवो और कलीसिया के प्राचीनों में कोई अन्तर नहीं था। आज कल के दौर में दीक्षा प्राप्त या नियुक्त किये गये पासबान व ले लीडरों के बीच में पाया जाने वाला भेद भी पहले नहीं था। सारे प्राचीन साधारणत: वह चेले थे जिन्हें किसी न किसी विशष कार्य के लिए तैयार करने के बाद उन्हे कलीसिया में प्राचीन के तौर पर नियुक्त कर दिय गया (ठहरा दिया गया) (ग्रीक:चेईरोटोनिओ) (प्रेरितों 14:21-23) (ग्रीक:काथिस्तिमी)(तीतुस 1:5)।

(2) प्राचीनों के परिषद के अन्दर पाये जाने वाले प्राचीन एक दूसरे की देखभाल करते हैं।

प्रेरित पौलुस ने इफिसुस की मण्डली के प्राचीनों (ग्रीक: प्रेस्बीटीरोई, अग्रेजी में: प्राचीन) को न केवल भेड़ों की देखभाल करने के लिए नहीं कहा(उनकी चिन्ता करने या उन पर ध्यान देने के लिए) (ग्रीक: प्रोसेको) नहीं कहा, वरन उसने आपस में एक दूसरे की देखभाल करने के लिए भी नहीं कहा (प्रेरितों 20:17,28)।

इस तरह से प्राचीलों की मण्डली या परिषद में से किसी प्राचीन को एक दूसरे पर प्रभुता करने का कोई अधिकार नहीं था। वे केवल एक दूसरे की देखभाल करते थे। नये नियम में ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि किसी स्थानीय या सार्वभौमिक कलीसिया में अगुवों के ऊपर कोई अगुवा को नियुक्त किया गया हो। आधुनिक विशेषता यह है कि 'बिशप' कलीसिया के बाकि अगुवों पर प्रधान होता है,जो कि नये नियम की कलीसिया का नमूना नहीं है। 'देखभाल' करने का काम प्राचीनों का था वह भो कलीसिया के सदस्यों की, न कि बिशप की जिम्मेदारी कि वह बाकि के अगुवों की देखभाल करे।

(3)यरूशलेम में होने वाली सभा कोई प्राचीनों के ऊपर अधिकारी ठहराने वाली सभा नहीं थी।

यरूशलेम की सभा, सीरिया में अन्ताकिया के विश्वासियों के प्रतिनिधी मण्डल और यहूदियों की मण्डली के प्राचीनों व मसीह के प्रेरितों के बीच में थी। इस सभा का उददेश्य इस समस्या का समाधान करना था कि यरूशलेम की मण्डली में से यहूदी मत के लेाग अन्ताकिया में आकर अन्यजातियों पर यहूदी विधियों का पालन करने का दबाव डाल रहे थे(प्रेरितों 151-35; गलातियों 1:6-9;4:9-10,17; 5:1-12; 6:12-16)। यरूशलेम की सभा उस समय पर पाये जाने वाली सारी कलीसियाओं का प्रतिनिधित्व करने वाली सभा नहीं थी। किसी भी मण्डली को दूसरी मण्डली पर किसी भी प्रकार का कोई अधिकार नहीं दिया गया था, और न ही इस प्रकार की किसी बात की कोई कल्पना की गयी थी। इस सभा में लिए गये निर्णयों (ग्रीक : डोगमाटा किकरीमाटा)(न्यायिक शब्दावली)को दूसरी मण्डलियों तक पहुंचा दिया गया था, परन्तु ये निर्णय किसी पर दबाव डालने वाले निर्णय नहीं थे, इन्हें प्रेरितों की ओर से सलाह भी कहा जा सकता है, और इस निर्णय को स्वीकार या अस्वीकार भी किया जा सकता था। मसोहियों को केवल पाप से दूर रहना था: उन्हें मूर्तिपूजा व अनैतिक यौन सम्बन्धों से दूर रहना था (प्रेरितों 16:4)। और सारे मसीहियों को कवल इस बात का ध्यान रखना था कि मसीहियों को उनके स्वतन्त्र आचरण से कोई ठोकर न लगे। अपने कमजोर भाईयों को प्रेम करने की खातिर उन्हें कुछ जरूरी बातों को त्यागने की जरूरत थी: 'जरूरी बातें' (ग्रीक:ईपानागकेस), उदाहरण के लिए मूर्तियों को चढ़ाया गया भोजन, लहू तथा गला घोटें गये पशु का मीट खाना(प्रेरितों 15:28-29; रोमियों 14:1-6)। यह किसी 'व्यवस्था' को पूरा करने का प्रश्न नहीं वरन 'प्रेम' का प्रश्न था।

नये नियम में मण्डली के प्राचीनों के ऊपर गठित की जाने वाली धर्मसभा या परिषद का बाइबल में कोई प्रमाण नहीं है। वर्तमान विशिष्टता, कि एक परिषद या कोई धर्मसभा या कोई समीति या सावभौमिक कलीसिया सारी कलीसियाओं के प्राचीनों का निरीक्षण करती है, नये नियम की कलीसिया का आचरण नहीं था।

5:2-4

प्रश्न 5 (चरवाहा, अध्यक्ष या निरीक्षक) प्राचीनों के परिषद का पहला लक्ष्य क्या है?

1 पतरस 5:2-4; प्रेरितों 20:28 **पढ़ें।**

ध्यान दें। प्राचीनों का प्रथम लक्ष्य परमेश्वर की भेड़ों को चरवाहा या पासबान होना है।

प्राचीनों का कार्य 'परमेश्वर की भेड़ों की रखवाली करना तथा निरीक्षकों या अध्यक्षों की सेवा करना"। प्रत्येक कलीसिया में केवल एक ही 'पास्टर या याजक' नहीं, वरन प्राचीनों का एक परिषद या दल होना चाहिए। प्राचीनों के दल में से हर एक को चरवाहा होना चाहिए या फिर उनके पास मण्डली में पासबानों की जिम्मेदारी होनी चाहिए। एक चरवाहा होने के नाते, प्राचीनों को, यीशु मसीह के समान अपने झुण्ड की रखवाली करनी चाहिए, जैसे वह सार्वभौमिक कलीसियाओं की रखवाली करता है(1 पतरस 2:25)। उन्हें मण्डली की आत्मिक बढ़ौतरी और भलाई को ध्यान में रखते हुए, उन्हें चराना,उनकी सुरक्षा करना, उनकी देखभाल करना तथा उनकी अगुवाई करना चाहिए। प्राचीनों को चरवाहे के समान अपने कर्तव्य को पूरा करना चाहिए, लेकिन किसी पद की अपेक्षा करते हुए नहीं,वरन एक आदर्श बनकर सेवा के कर्तव्य को पूरा करना चाहिए (1 पतरस 5:3-4)। हर एक प्राचीन को दूसरे प्राचीन तथा मण्डली के दूसरे सदस्यों का ख्याल रखना चाहिए (प्रेरितों 20:28)। इस तरह से प्राचीन और मण्डली के सदस्य एक दूसरे के प्रति उत्तरदायी रहते हैं। प्राचीन को झूठे शिक्षकों से सावधान रहना चाहिए (प्रेरितों 20:28-31)। प्राचीन को मण्डली के वास्तव में जरूरतमन्द लोगों के प्रति अपने प्रेम व देखरेख को प्रगट करना चाहिए जैसे,अनाथ, विधवाएं और नय विश्वासी। प्राचीनों को जाकर बीमारों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए (याकूब 5:14)।

प्रश्न 6. (भण्डारी) प्राचीनों के दल का दूसरा लक्ष्य क्या होता है?

पढ़ें 1 तीमुथीयुस 3:4-5; 5:17; तीतुस 1:7

ध्यान दें। प्राचीनों का दूसरा कर्तव्य परमेश्वर के भवन का प्रबन्धक होना है।

प्राचीनों को दूसरा काम उनके परिवार व कलीसिया के जीवन से जुड़े मामलों में 'आगे आगे चलकर राह दिखाना' या 'प्रबन्ध करना या दिशा निर्देश' देना है (ग्रीक: प्रोइस्टीमी) (1तीमुथीयुस 3:5; 5:17)। वे अपने जीवन के अच्छे उदाहरण द्वारा अपनी मण्डली को दिशा प्रदान करते हैं। वे परमेश्वर के भवन के प्रबन्धक, सम्भालने वाले या प्रशासन कार्य को करने वाले हैं (ग्रीक: ओईकोनोमोई) (तीतुस1:7)।

वे कलीसिया के सदस्यों का उनकी सारी गतिविधियों और अधिकारों में अगुवाई/सहायता करते हैं। उदाहरण के लिए, वे सभाओं,प्रचारकार्य, शिष्यता,प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा कलीसिया की अन्य सेवकाई की सारी व्यवस्था करते हैं। यदि कोई प्राचीन अपने घर परिवार व बच्चों का ठीक से रखरखाव नहीं कर पाता या उसके बच्चों को उसके अधिक समय व ध्यान की जरूरत है तो, उस दशा में उसे अपने पद से इस्तीफा दे देना चाहिए ताकि वह अपने परिवार को पर्याप्त समय और ध्यान दे सके (1 तीमुथीयुस 3:4-5)।

प्रश्न 7 (शिक्षक) प्राचीनों के दल का तीसरा लक्ष्य क्या है?

पढ़ें 1 तीमुथीयुस 3:2; 5:17; तीतुस 1:9

ध्यान दें। प्राचीनों का तीसरा कर्तव्य परमेश्वर के वचन का शिक्षक होना है।

प्राचीनों को तीसरा लक्ष्य 'शिक्षा देना' और 'प्रचार करना' है। उसे बाइबल के सिद्धान्तों की 'शिक्षा देने में निपुण होना' (ग्रीक: डिडाक्टिकोस) (1 तीमुथीयुस 3:2) और 'प्रचार करने व शिक्षा देने में सक्रिय होना' जरूरी है(ग्रीक:एन लोगो काई डिडासकालिया) (1 तीमुथियुस5:17)। वे 'विश्वास योग्य वचनों को जो धर्मोपदेश के अनुसार हैं' मज़बूती से थामे रहें, ताकि वे उचित सिद्धान्तों द्वारा दूसरों को प्रोत्साहित कर सकें तथा विरोध करने वालों का खण्डन कर सकें (तीतुस 1:9)।

प्राचीनों का यह कर्तव्य बाइबल में बताए गये सारे कामों को समावेशित कर लेता है। एक शिक्षक के रूप में प्राचीन को परमेश्वर के वचन का इस्तेमाल कलीसिया के सदस्यों को परमेश्वर की इच्छा को समझाने(प्रेरितों 20:27)तथा उनकी सहायता करने वाले सारे कामों में करना चाहिए (प्रेरितों 20:20)। उन्हें कभी बाइबल में लिखित बातों से आगे नहीं बोलना या बढ़ना चाहिए (1 कुरिन्थियों 4:6)! उन्हें कलीसिया को यीशु मसीह द्वारा दी गयी सारी आज्ञाओं का पालन करना सिखाना चाहिए(मत्ती 28:19)। उन्हें मसीहियों और गैरमसीहियों में समानता से परमेश्वर का वचन प्रचार करना चाहिए। उन्हें कलीसिया के सदस्यों को सिखाना,प्रोत्साहित करना और चेताना चाहिए। उन्हें आपस में सैद्धान्तिक मुद्दों पर चर्चा करके निर्णय लेने चाहिए तथा झूठी शिक्षाओं आदि.का खण्डन करना चाहिए।

5:2-3

प्रश्न 8, (सेवक) प्राचीनों के दल का चौथा कर्तव्य क्या है?

पढ़ें 1 पतरस 5:2-3; मत्ती 20:25-28।

ध्यान दें। प्राचीनों का चौथा कर्तव्य परमेश्वर व लोगों के दास होना है।

प्राचीनों को चौथा कर्तव्य 'दास होना है'। यीशु ने उनको अपने पास बुलाकर कहा,"तुम जानेते हो कि अन्यजातियों के हाकिम उन पर प्रभुता करते हैं; और जो बड़े हैं, वे उन पर अधिकार जताते हैं। परन्तु तुम में ऐसा नहीं होगा; परन्तु जो कोई तुम में

बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने और जे तुम में प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने; जैसे कि मनुष्य का पुत्र;वह इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुडौती के लिए अपने प्राण दे।"

परमेश्वर व लोगों के दास होने के नाते,प्राचीनों को दूसरे लोगों की भलाई के लिए अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करना चाहिए। इन लक्ष्यों की करने में प्राचीनों की अगुवाई की शैली का पता चल जाता है। अगुवों के स्थानीय कलीसिया में अगुवाई करने का तरीका संसार भर में अगुवाई करन के तरीके से अलग होना चाहिए। अगुवों को स्वेच्छा से, स्वतन्त्रता से और लगन के साथ सेवा करनी चाहिए। वे उनके अधीन सौंपे गये लोगों पर प्रभुत नहीं कर पाएंगे (1 पतरस 5:3)! वे विश्वासियों के लिए आदर्श होने चाहिए। हुक्म देकर अगुवाई करने की बजाय उन्हें अपना उदाहरण पेश करते हुए अगुवाई करना चाहिए। उन्हें अपनी सेवा टहल करवाने की बजाय, कलीसिया के सदस्यों की सेवा करनी चाहिए।

5:5-6

प्रश्न 9. प्राचीनों के प्रति मसीहियों का व्यवहार कैसा होना चाहिए?

ध्यान दे। सीमित अधिकार।

परमेश्वर ने प्राचीनों को अधिकार दिया है (रोमियों 13:1-2),लेकिन उनका अधिकार उनकी जिम्मेदारी के हिसाब से सीमित है (प्रेरितों 4:19-20; 5:29),जिसके बारे में ऊपर बताया गया है। इसके अलावा प्राचीन स्वयं यीशु मसीह के अधिकार के अधीन अर्थात बाइबल के अधिकार के अधीन (सही तरीक से समझाया गया है), पवित्र आत्मा के अधिकार के अधीन (जो कभी भी बाइबल के विरूद्ध बातें नहीं करता) और प्राचीनों के दल के अधिकार के अधीन होते हैं। उनके निर्धारित कामों के क्षेत्र में, प्राचीनों के पास अधिकार होता है और मण्डली क लोगों ने उनके अधिकारों के प्रति समर्पित होना चाहिए (1 थिस्लुनिकियों 5:12; इब्रानियों 13:7,17)।

फिर भी, किसी का बचाने, बदलने, लोगों को इस्तेमाल और आशीषित करने,वचन व आत्मा के द्वार अगुवाई करने, आत्मिक वरदान देने, विशेष मकसद देने तथा किसी विशेष सेवकाई के लिए बुलाने का अधिकार सिर्फ यीशु मसीह के पास है किसी प्राचीन के पास नहीं।

आधीनता।

प्रेरित पतरस सिखाता है: " हे जवानों, इसी तरह हे नवयुवकों, तुम भी प्राचीनों के अधीन रहो" 1 पतरस 5:5 में शब्द 'प्रेस्बीटीरोई' का मतलब सबसे पहले तो बुजुग व्यक्ति है, क्योंकि यह शब्द 'विओटीरोई' जवान व्यक्ति के विपरीत है। लेकिन इसके साथ साथ इसका मतलब उन प्राचीनों से भी है जो मण्डली के अगुवे हैं, क्योंकि अनुच्छेद (1 पतरस 5:1-4) प्राचीनों के सन्दर्भ में बात करता है।

बुजुर्गों व प्राचीनों के प्रति किया जाने वाला उचित व्यवहार ही अधीनता है (1 पतरस 5:5-6)। लेकिन, जिस तरह से जवानों को भी अधीन होना चाहिए अर्थात जिस तरह से बुजुर्ग लोग (जिनमें प्राचीन भी शामिल हैं) भी जवानों के प्रति आधीन है। मसीहियों के बीच में उचित मसीह व्यवहार पारस्परिक अधीनता है (इफिसियों 5:21)। अत: बुजुर्गों (जिसमें प्राचीन भी शामिल हैं) का सबसे पहला कर्तव्य अपने प्रभाव का जवानों पर अभ्यास करना है और एक जवान का प्रथम कर्तव्य बुजुर्गों के (जिसमें प्राचीन भी शामिल हैं)प्रभाव के अधीन होना है। जवान विश्वासियों को हमेशा सीखने में तत्पर होना चाहिए। जवानों का दूसरा कर्तव्य बुजुर्गों की शिक्षाओं का अभ्यास करना है। (जिसमें प्राचीन भी शामिल हैं) (1 तीमुथीयुस 4:12) तथा बुजुर्गों का (जिसमें प्राचीन भी शामिल हैं) दूसरा कर्तव्य जवानों के प्रभाव के अधीन होना है (1 तीमुथीयुस 5:1)। सीखने के मामले में बुजुर्गों व प्राचीनों को दूसरों के सामने एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए।

नम्रता।

परमेश्वर कलीसिया के सदस्यों और कलीसिया के अगुवों से जिस चीज़ की मांग करता है वह नम्रता है। और कोई भी नम्र व्यक्ति अपने महत्व, अपनी योग्यता, या उपलब्धियों, से कभी फूलता नहीं चाहे वह प्राचीन ही क्यों न हो। एक नम्र व्यक्ति धमण्ड के साथ अपनी बातों को आगे नहीं रखता। वह मण्डली में अपने लिए अधिकार या शक्ति की मांग नहीं करता (3 यूहन्ना 9-11)। वह किसी पर हुक्म नहीं चलाता और न ही प्रभुता करता है (मत्ती 20:25-28;1 पतरस 5:2-3)। एक नम्र व्यक्ति दूसरों को तुच्छ नहीं समझता, बल्कि वह दूसरों को सदैव अपने से बेहतर समझता है (फिलिप्पियों 2:3-4)।

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दे: इस अनुच्छेद में प्राप्त सच्चाईयों में से मसीही लोग सम्भवत: किन का इस्तेमाल कर सकते हैं?

बांटे व लेखा रखें: आईये हम 1 पतरस 5:1-7 के आधार पर एक दूसरें के साथ विचार विर्मश करें, और जो कार्य सम्भव है उनकी सूचि बनाएं।

ध्यान दें: किस सच्चाई के विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप सम्भवत: उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

लिखें: इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को नि:संकोच दूसरों के साथ बाँटे। (याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा, और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से इस्तेमाल करं। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

1. 1 पतरस 5:1-7 से इस्तेमाल किये जाने वाले सम्भावित उदाहरण।

5:1. एक प्राचीन दूसरे प्राचीनों से उस काम को पूरा करने का निवेदन कर सकता है, जो मसीह ने प्राचीनों को सौंपा है। क्योंकि इस आग्रह को बाइबल में लिखा गया है इसलिए, मण्डली का प्रत्येक सदस्य प्राचीनों से प्राचीनों की जिम्मेदारी पूरा करने के लिए आग्रह कर सकता है।

5:2 यदि आप एक प्राचीन हैं,तो आप मण्डली के सदस्यों के चरवाहे बनें। उन्हें परमेश्वर के वचन से खिलाएं, प्रार्थना और चेताने के द्वारा उनकी सुरक्षा करें और उन्हें परमेश्वर के वायदों द्वारा प्रोत्साहित करें। खोये हुए सदस्यों के ढूँढ़ने का प्रयास करें। बुढ़े लोगां व बीमारों से मिलें। अनाथ व विधवाओं की देखभाल करें।

5:2 यदि आप एक प्राचीन हैं,हमेशा मण्डली के लोगों की एक ऐसे निरीक्षक के रूप में सहायता करें जो पूरी तरह से अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करने के लिए इच्छुक हो, जिसका मकसद अच्छा हो (वह पैसों के लिए लालची न हो) और जिसमें सेवा करने की लगन हो।

5:3 यदि आप एक प्राचीन हैं तो, विश्वासियों पर किसी स्वामी के जैसे हुक्म न चलाएं।

5:3 यदि आप एक प्राचीन हैं तो, मण्डली के लिए एक ऐसा आदर्श बने, जिसका हर कोई अनुसरण करना चाहता हो।

5:3,5 जवानों और बूढ़ों को एक दूसरे के अधीन होना चाहिए। एक बुजुर्ग व्यक्ति का पहला कर्तव्य जवान की योग्यता का अभ्यास करें तथा एक जवान का कर्तव्य है कि वह बुजुर्गों के प्रभाव के अधीन रहें। जवानों का दूसरा कर्तव्य यह है कि वे अपने प्रभावों का इस्तेमाल बूढ़ों पर करें और बूढ़ों का दूसरा कर्तव्य है कि वे जवानों के प्रभाव के अधीन रहें।

5:6 एक प्राचीन व एक कलीसिया का सदस्य होने के नाते, अपने आपको परमेश्वर के हाथों के नीचे आधीन करें।

5:7 एक प्राचीन व कलीसिया का सदस्य होने के नाते, अपनी सारी चिन्ताओं को परमेश्वर पर डाल दो, क्योंकि वह आपकी चिन्ता करता है।

2. 1 पतरस 5:1-7 से व्यक्तिगत अभ्यास।

मैं अपनी कलीसिया में जवानों का प्रचारक व अगुवा हूँ। मैंने आज सीखा है कि मसीही अगुवा जिन लोगों की अगुवाई करता है वह असल में उनकी सेवा करता है। इससें भी बढकर बात यह है कि व स्वयं एक आदर्श बनकर लोगों की अगुवाई करता है। मैं भी एक ऐसा ही अगुवा बनना चाहता हूँ। मैं उन अगुवों के समान नहीं बनना चाहता जो उनके अधीन विश्वासियों पर हुक्म चलाते हैं,बल्कि मैं अपने कामों को स्वेच्छा से,लगन से और नम्रता के साथ करना चाहता हूँ।

मैं अपनी कलीसिया में एक प्राचीन हूँ। आज बाइबल ने मुझे स्मरण कराया है कि मेरा कर्तव्य वास्तव में परमेश्वर के लोगों का चरवाहा होना और परमेश्वर के कामों का प्रबन्धक होना है। मुझ दूसरे प्राचीनों को स्मरण कराना चाहिए कि हमें दूसरों पर प्रभुता करते हुए अपने कामों के लिए उनका इस्तेमाल नहीं करना है। मुझे अपने व्यक्ति उदाहरण द्वारा लोगों की देखभाल करनी चाहिए, उनको प्रोत्साहित और प्रेरित करना चाहिए।

कदम 5. प्रार्थना — प्रतिउत्तर

आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें 1 पतरस 5:1-7 में सिखाई हैं।

(जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन के समूह में होकर **लगातार प्रार्थना करते रहें।** एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ 1 पतरस 5:1-7 के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: व्यवस्थाविवरण 11:13-21; 16:18-20; 17:14-20; 18:9-13; 18:14-22 को पढ़ते हुए परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। प्रश्न पूछने वाले तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। उद्धार विश्वास से ह। यूहन्ना 1:12 । रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।